लक्ष्य सिद्धि
संकल्प, कर्म और समत्व की यात्रा

लक्ष्य सिद्धि की पांच कुंजियां

पहली – स्पष्टता, हमें यह ज्ञात होना चाहिए कि हम वास्तव में क्या चाहते हैं...

दूसरी – यथार्थता, लक्ष्य ऐसा हो जिसे पुरुषार्थ द्वारा प्राप्त किया जा सके...

तीसरी – निरंतर कर्म, प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा आगे बढ़ना ही अंततः बड़ी उपलब्धियों का कारण बनता है...

चौथी – बाधाओं का मूल कारण समझना, केवल समस्या से नहीं, उसके कारण से संघर्ष करना चाहिए...

पांचवीं – समत्व, सफलता मिलने पर अहंकार न हो और असफलता मिलने पर निराशा न हो...

मनुष्य को जीवन केवल समय बिताने के लिए नहीं मिला है। जीवन का प्रयोजन है स्वयं को बड़ा बनाना, अपनी क्षमताओं को विकसित करना और ऐसा कुछ करना जिससे जीवन सार्थक हो। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को समय-समय पर स्वयं से यह प्रश्न अवश्य पूछना चाहिए कि वह दो वर्ष, पांच वर्ष और दस वर्ष बाद अपने जीवन को किस रूप में देखना चाहता है। लक्ष्यहीन जीवन उस नौका के समान है जिसके पास दिशा नहीं है, वह लहरों के सहारे इधर-उधर भटकती रहती है। **लक्ष्य के अभाव में हम अपनी असंतुलित भावनाओं को ही अपने जीवन की दिशा निर्धारित करने का कार्य दे देते हैं और फिर एक समय ऐसा आता है जब हमें यह अनुभव होता है कि हमने जीवन को व्यर्थ कर दिया। यह भाव अत्यंत दुःखदायी है।**

कल्पना और लक्ष्य में अंतर

सबसे पहले लक्ष्य का निर्धारण करना आवश्यक है और लक्ष्य ऐसा होना चाहिए जो प्राप्य हो। **कल्पना और लक्ष्य में यही अंतर है कि कल्पना केवल सुखद स्वप्न देती है, जबकि लक्ष्य कर्म की प्रेरणा देता है।** यदि कोई व्यक्ति बिना किसी तैयारी और प्रयास के पांच वर्ष में अंबानी जैसा धनी बनने की कल्पना करे, तो यह स्वप्न तो हो सकता है, पर लक्ष्य नहीं। ऐसी इच्छा सुनने पर भी अनर्गल प्रतीत होती है। लक्ष्य वही है जो हमारी योग्यता, परिस्थितियों और पुरुषार्थ के अनुरूप हो और जिसे प्राप्त करने के लिए हम निरंतर प्रयास कर सकें।

दीर्घकालीन और अल्पकालीन लक्ष्यों का विभाजन

लक्ष्य बनाते समय दीर्घकालीन और अल्पकालीन दोनों प्रकार के लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए। दस वर्ष का लक्ष्य हमें जीवन की दिशा देता है, पांच वर्ष का लक्ष्य उस दिशा को स्पष्ट करता है, और दो वर्ष का लक्ष्य हमें प्रतिदिन के कर्मों का आधार प्रदान करता है। यदि किसी व्यक्ति का उद्देश्य एक अच्छा चिकित्सक बनना है, तो उसका दस वर्ष का लक्ष्य उस क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करना हो सकता है। पांच वर्ष का लक्ष्य शिक्षा पूर्ण करना और दो वर्ष का लक्ष्य आवश्यक परीक्षाओं की तैयारी करना हो सकता है। इस प्रकार बड़ा लक्ष्य छोटे-छोटे चरणों में विभाजित होकर साध्य बन जाता है।

गीता: कर्म पर अधिकार, फल पर नहीं

बाधाओं का आना तो जीवन का स्वाभाविक अंग है, यह निश्चित है। पर यदि हर बाधा को देखकर हम ठिठक जाएं और यह सोचने लगें कि संभवतः ईश्वर की इच्छा नहीं है, तो हम कभी अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाएंगे। गीता कहती है कि **कर्म करना हमारे अधिकार में है, परन्तु फल हमारे अधिकार में नहीं, यह सूत्र केवल दर्शन का वाक्य नहीं, यह लक्ष्य-प्राप्ति की सबसे व्यावहारिक नीति है।** इसका अर्थ यह नहीं कि फल की आवश्यकता नहीं है, बल्कि इसका अर्थ यह है कि हमारा ध्यान परिणाम से अधिक कर्म पर होना चाहिए। जब हम फल से अपना सम्बन्ध शिथिल कर देते हैं और केवल कर्म पर अपनी दृष्टि केंद्रित रखते हैं, तब बाधाएं हमें रोक नहीं पातीं, क्योंकि बाधा का भय तो तभी जन्म लेता है जब हम परिणाम से अत्यधिक आसक्त हो जाते हैं।

अर्जुन का ठिठकना और स्थितप्रज्ञ की स्थिति

जब व्यक्ति अपने कर्म में तल्लीन हो जाता है, तब असफलता भी उसे विचलित नहीं करती और सफलता भी उसे अहंकार से भर नहीं देती। अर्जुन भी युद्धभूमि में मोह और भय से ठिठक गया था, पर श्रीकृष्ण ने उसे परिणाम की चिंता से मुक्त करके कर्तव्य की ओर लौटाया।

गीता का संदेश इसका सीधा समाधान देता है - **बाधा ईश्वर की अनिच्छा का प्रमाण नहीं है, बाधा तो कर्मक्षेत्र का स्वाभाविक स्वरूप है। जो साधक समबुद्धि से, सुख-दुःख और सफलता-असफलता को समभाव से देखते हुए कर्म करता रहता है, वही स्थितप्रज्ञ कहलाता है, और स्थितप्रज्ञ साधक ही अंततः लक्ष्य को सिद्ध करता है।**

काली: सूक्ष्म बुद्धि और मूल कारण का नाश

जहां गीता हमें कर्म और फल के बीच का संतुलन सिखाती है, वहीं **लक्ष्य की प्राप्ति के लिए केवल परिश्रम ही पर्याप्त नहीं है, सूक्ष्म बुद्धि भी आवश्यक है।** देवी काली की कथा इसी सत्य को प्रकट करती है और हमें यह भी सिखाती है कि बाधा को कैसे निर्भीकता से पार किया जाए। **'काली काल को भी वशीभूत करने वाली शक्ति है...'** जब समय स्वयं किसी के अधीन हो जाए, तो उसके लिए कोई भी लक्ष्य असाध्य नहीं रह जाता।

काली के अवतरण की कथा ही लक्ष्य सिद्धि की ही कथा है। रक्तबीज के प्रत्येक रक्तकण से नया असुर उत्पन्न हो जाता था और देवता भी उस समस्या के समाधान में असमर्थ हो गए। **यदि केवल ऊपर से प्रहार किया जाता, तो समस्या समाप्त नहीं होती। तब देवी चामुंडा ने काली रूप धारण किया। काली ने अपनी जिह्वा फैलाकर रक्तबीज के प्रत्येक रक्त बिंदु को धरती पर गिरने से पहले ही ग्रहण कर लिया, जिससे कोई नया असुर उत्पन्न ही न हो सके। यह केवल बल का प्रदर्शन नहीं था, यह उस सूक्ष्म बुद्धि का प्रतीक है जो लक्ष्य की सिद्धि के लिए समस्या की जड़ को ही समाप्त कर देती है।**

विजय के पश्चात संयम: काली का शिव पर पग

काली का यह स्वरूप भी अत्यंत महत्वपूर्ण है कि वे संहार के पश्चात रुकी नहीं, उनका रौद्र रूप इतना प्रचंड हो गया कि सृष्टि के संतुलन के लिए स्वयं शिव को उनके चरणों में लेटना पड़ा। यह दर्शाता है कि जब साधक अपने लक्ष्य में पूर्णतः तल्लीन हो जाता है, तो उसे बाहरी संसार का भान भी शेष नहीं रहता। काली का शिव के ऊपर पग रखकर भी लज्जा से जिह्वा निकाल लेना, यह उस क्षण का प्रतीक है **जब लक्ष्य सिद्धि की चरम अवस्था में साधक को आत्मबोध होता है, और वह अपनी शक्ति को पुनः संतुलन में स्थापित कर लेता है। लक्ष्य सिद्धि का अर्थ केवल विजय नहीं, अपितु विजय के पश्चात संयम भी है, और यह संयम ही गीता के समत्व भाव से मिलता है।** जो साधक काली की

कृपा से निर्भय होकर बाधाओं का संहार करता है, उसे भी अंततः गीता के ज्ञान को धारण करना होता है कि **सफलता मिलने पर अहंकार में न डूबे, असफलता मिलने पर विषाद में न डूबे, क्योंकि लक्ष्य की वास्तविक सिद्धि बाहरी उपलब्धि और भीतरी संतुलन, दोनों के संगम में ही है।**

दो परंपराएं, एक सत्य

इस प्रकार गीता और काली, दोनों परंपराए एक ही सत्य को दो भिन्न मार्गों से प्रकट करती हैं। गीता हमें सिखाती है कि **कर्म में रहो, फल का मोह छोड़ो, बाधा को ईश्वर की अनिच्छा मत मानो।** काली हमें सिखाती हैं कि **बाधा के मूल कारण को निर्भीकता से समाप्त करो, और सिद्धि के पश्चात भी संयम मत खोओ।** जो साधक इन दोनों शिक्षाओं को अपने जीवन में धारण करता है, उसका संकल्प इतना दृढ़ हो जाता है कि वह अपने लक्ष्य के मार्ग में आने वाले प्रत्येक विघ्न को, चाहे वह बाहरी हो या भीतरी, समूल नष्ट करने का सामर्थ्य पा लेता है, और साथ ही उस संकल्प को समत्व भाव की डोर से बांधे रखता है।

संकल्प से समत्व तक की यात्रा

इस प्रकार **लक्ष्य सिद्धि की यात्रा केवल बाहरी उपलब्धि की यात्रा नहीं है। यह स्वयं को अनुशासित करने, भय से ऊपर उठने, निरंतर कर्म करने और अंततः समत्व को प्राप्त करने की यात्रा है। संकल्प उसका आरम्भ है, पुरुषार्थ उसका मार्ग है और संतुलन उसकी अंतिम सिद्धि है।** यही है सच्चे अर्थों में लक्ष्य सिद्धि की पूर्ण यात्रा, संकल्प से आरम्भ, निर्भीक कर्म से मार्ग और समत्व से चरम सिद्धि तक की यात्रा। गीता के कर्मयोग और महाकाली की निर्भीकता से साधक के जीवन में कोई भी लक्ष्य असाध्य नहीं रह जाता।

भाद्रपद कृष्ण अष्टमी साधनात्मक दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण अवसर है। इस दिन महाविद्या काली की जयन्ती भी होती है और इसी दिन कर्म को धर्म का ज्ञान प्रदान करने वाले भगवान श्रीकृष्ण की जन्मोदिवस भी है।

महाविद्या काली का बीज मंत्र 'क्रीं' है और श्रीकृष्ण का बीज मंत्र 'क्लीं' है। महाविद्या काली अपनी तीव्र शक्ति द्वारा लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में आ रही बाधाएं समाप्त करती है और भगवान श्रीकृष्ण कर्मयोग के माध्यम से लक्ष्य प्राप्ति के अडिग रहने की शक्ति और प्रेरणा प्रदान करते है।

जीवन के महत्वपूर्ण लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये संकल्प लेकर भाद्रपद कृष्ण अष्टमी के महत्वपूर्ण साधनात्मक दिवस में महाकाली बाधा निवारण साधना और लक्ष्य सिद्धि क्लीं साधना सम्पन्न करें।

जीवन मार्ग में आने वाली बाधाओं का समापन और निरन्तर कर्मयोग द्वारा ही साधक अपने लक्ष्य को सिद्ध कर सकता है। सद्गुरुदेव से महाकाली बाधा निवारण शक्तिपात दीक्षा और लक्ष्य सिद्धि श्रीकृष्ण दीक्षा ग्रहण कर साधना सम्पन्न करें आपको अवश्य ही लक्ष्य प्राप्ति होगी।